23

दो आदम[1]

(5:12-17 का एक अध्ययन)

रोमियों 5:12-21 में पौलुस ने आदम और मसीह में तुलना और अन्तर किया। पहले कुरिन्थियों के नाम एक पत्र में उसने ऐसी ही तुलना/अन्तर किया था:

> क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:21, 22)।
>
> ऐसा ही लिखा है कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना (1 कुरिन्थियों 15:45)।
>
> प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है (1 कुरिन्थियों 15:47)।
>
> और जैसे हम ने उसका रूप, जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे (1 कुरिन्थियों 15:49)।

पौलुस ने पहले आदम को सांसारिक परिवार के मुखिया के रूप में दिखाया जिसे मरना था, जबकि ''अन्तिम आदम'' (मसीह) को आत्मिक परिवार (कलीसिया) के मुखिया के रूप में जो जीवन के लिए था।

इस पाठ में हम रोमियों 5 में पौलुस द्वारा आदम और मसीह में की गई तुलना/अन्तर का विस्तृत अध्ययन आरम्भ करते हैं। हम पहले आदम और ''अन्तिम आदम'' से सम्बन्धित 1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस की शब्दावली में से ही लेंगे। जैसा कि पिछले पाठ में कहा गया था, इस विवादास्पद वचन की आयतों में पौलुस की बातों को समझना हमेशा आसान नहीं है। मैं वचन पाठ की सम्भावित व्याख्याओं का सुझाव दूंगा। आप प्रार्थनापूर्वक इस वचन का अध्ययन करें और अपने ही निष्कर्ष निकालें।

दो ''आदमों'' का परिचय दिया गया (5:12-14)

इस वचन का विवाद पहले शब्द ''इसलिए'' (आयत 12क) से ही आरम्भ होता है। ''इसलिए'' इस भाग को उससे जोड़ता है, जो पहले हो चुका है, परन्तु उसमें सम्बन्ध क्या है? कुछ लोग इस वचन को पिछली आयत (आयत 11) या ''पिछले भाग'' (आयतें 1-11) से जोड़ते हैं। अन्यों का मत है कि किसी प्रकार हमारा वचन पाठ पिछले चार अध्यायों को संक्षिप्त करता है। उदाहरण के लिए, कई लोग यह ध्यान दिलाते हैं कि पत्र में पहले दो विषय ''दोषी

ठहराया जाना'' (1:18-3:20) और ''धर्मी ठहराया जाना'' (3:21-5:21) हैं। फिर वे सुझाव देते हैं कि 5:12-21 इन में से हर एक के स्रोत का विवरण देता है। आयत 16 में हम पढ़ते हैं, ''क्योंकि एक ही [आदम] के कारण *दण्ड* की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुतेरे अपराधों से [यीशु का] एक वरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी *ठहरे*।''

पहले हो चुके से मेल खाने की 12 से 21 आयतों की मेरी पंसदीदा व्याख्या एक आरम्भिक मसीही लेखक क्रिसोस्टोम द्वारा बहुत पहले दी जा चुकी है (लगभग 347-407 ईस्वी)। उसने सुझाव दिया कि पौलुस फिर से यहूदी आपत्ति का अनुमान लगा रहा था, इस बार उसकी इस शिक्षा का भी कि यीशु की मृत्यु ने यहूदियों और अन्यजातियों सब के लिए उद्धार उपलब्ध कराया है (देखें 3:22)। क्रिसोस्टोम के लिखने का अभिप्राय था, ''जब यहूदी पूछें कि, 'किसी एक अर्थात मसीह की भलाई से संसार का उद्धार कैसे हुआ?' तो आप उसे कह सकते हैं, 'एक अर्थात आदम के आज्ञा न मानने से संसार दोषी कैसे ठहराया गया?' ''[2] यहूदी लोग इस तथ्य को मानते थे कि एक व्यक्ति (आदम) के एक कार्य से त्रासदी आई और पौलुस ने ध्यान दिलाया कि इसी प्रकार एक मनुष्य (मसीह) के एक कार्य से विजय आई।

पहले आदम का परिचय दिया गया

पौलुस की पिछली टिप्पणियों से इसका जो भी सम्बन्ध हो, उसने अपनी बात इस वाक्य के साथ आरम्भ की: ''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया'' (आयत 12क)। वह ''एक मनुष्य'' आदम था (देखें आयत 14)।[3] बिना किसी संदेह के पौलुस को मालूम था कि हव्वा ने मना किया हुआ फल पहले खाया था और आदम ने उसके बाद खाया था (उत्पत्ति 3:6)। तौभी अपने परिवार के मुखिया के रूप में आदम (देखें इफिसियों 5:23क) ही पाप के लिए जिम्मेदार ठहराया गया। फल न खाने की आज्ञा पहले उसे ही दी गई थी। (उत्पत्ति 2:15-17)। इसके अलावा हव्वा के विपरीत आदम बहकावे में नहीं आया था; उसने परिणामों की स्पष्ट समझ रखते हुए कार्य किया था (1 तीमुथियुस 2:14)।

आदम के आज्ञा न मानने का एक परिणाम यह हुआ कि ''पाप संसार में आया।'' आदम के पाप करने से पूर्व पाप था क्योंकि पतरस ने उन स्वर्गदूतों के विषय में लिखा, जिन्होंने पाप किया था (2 पतरस 2:4), परन्तु आदम के पाप से उस नये बनाए संसार जिसे हम ''पृथ्वी'' कहते हैं, में पाप आया।

दूसरा परिणाम यह हुआ कि ''पाप के द्वारा'' संसार में ''मृत्यु'' ने प्रवेश किया (आयत 12ख)। ''मत्यु'' का अनुवाद यूनानी शब्द *thanatos* से हुआ है। पौलुस ने रोमियों की पुस्तक में इस शब्द के रूपों का इस्तेमाल लगभग तीस बार किया। *Thanatos* शब्द में भी ''अलग होने'' का विचार पाया जाता है। शारीरिक मृत्यु ''आत्मा का देह से अलग होना'' है (याकूब 2:26क)। आत्मिक मृत्यु ''मनुष्य का परमेश्वर से अलग होना है''[4] (देखें यशायाह 59:1, 2; इफिसियों 2:1; 1 तीमुथियुस 5:6)। जब दुष्ट लोगों को ''प्रभु के सामने से'' सदा के लिए अलग किया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:9), वह ''दूसरी मृत्यु'' होगी (प्रकाशितवाक्य 20:6, 14)। (रोमियों के नाम अपना पत्र लिखते हुए पौलुस ने इससे सम्बन्धित अर्थों में भी ''मृत्यु'' शब्द के रूपों का इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए उसने पाप के लिए मरने [6:2] और व्यवस्था के

लिए मरने [7:4-6] की बात की।)

पिछले पाठ में की गई चर्चा की तरह, हम आयत 12 के ''मृत्यु'' शब्द का अर्थ शारीरिक मृत्यु से लेकर उस *हर* त्रासदी के लिए करेंगे जो आदम के पाप से मनुष्य जाति में आई। परमेश्वर ने आदम को बताया कि यदि वह भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से खाएगा, तो वह मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17; देखें 3:19) और वह मर भी गया (5:5)। शारीरिक मृत्यु का यह श्राप आदम तक ही सीमित नहीं था। हमारा वचन पाठ आगे कहता है, ''और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, ...'' (आयत 12ग)। LB में इसका अनुवाद ''सो सब कुछ बूढ़ा होने और मरने लगा'' है। एक बार एक सर्जन आधुनिक दवाइयों के बड़े विकास पर भाषण दे रहा था। ''परन्तु,'' जोड़ते हुए उसने कहा, ''इस अद्‌भुत विकास के बावजूद मृत्यु दर आज भी 100% है।''[5]

इसके अलावा आदम द्वारा भोगी गई ''मृत्यु'' केवल शारीरिक मृत्यु तक ही सीमित नहीं। उसके पाप ने उसे परमेश्वर से अलग कर दिया (यशायाह 59:1, 2), जिस कारण वह आत्मिक रूप में भी मर गया। स्पष्टतया पौलुस ने अपने विचारों में आत्मिक मृत्यु को जोड़ा: ''इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया'' (आयत 12ग)। ''सबने पाप किया'' का अनुवाद उन्हीं यूनानी शब्दों (*pantes hemarton*) से किया गया है, जिनसे (3:23) ''सबने पाप किया है'' किया गया। यह मानते हुए कि पौलुस ने यहां उसी समझ से शब्दों का इस्तेमाल किया, आयत 12 इन तथ्यों के साथ कुछ और सिखाती है: ''जब आदम ने पाप किया, तो संसार में शारीरिक और आत्मिक दोनों मृत्यु आईं।[6] शारीरिक मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, और इसी प्रकार आत्मिक मृत्यु भी क्योंकि सबने[7] पिता आदम के नमूने की नकल की और पाप भी किया है।''

पौलुस ने आयत 12 में आरम्भ किए वाक्य को समाप्त नहीं किया। ''पाप किया'' शब्द के बाद डैश देते हुए NASB में इसका संकेत दिया गया है। अन्य अनुवादों में यह संकेत अलग ढंग से दिया गया है। ASV में भी आयत 12 के बाद एक कॉलन और एक डैश है जबकि KJV में आयतें 13 से 17 को कोष्ठक में रखा गया है। आयत 12 का विचार आयत 18 में फिर से देखा जाएगा।

आयत 13 का आरम्भ होता है, ''व्यवस्था के दिए जाने पर पाप जगत में तो था।'' यूनानी में ''व्यवस्था'' शब्द से पहले कोई निश्चित उपपद नहीं है, परन्तु पौलुस के मन में स्पष्टतया मूसा की व्यवस्था थी (देखें आयत 14)। जैसा कि पिछले पाठों में देखा गया, लोगों के पास व्यवस्था रहती ही है, परन्तु मूसा की व्यवस्था दिए जाने तक उनके पास *लिखित* व्यवस्था नहीं थी। लोगों ने उस अलिखित व्यवस्था को तोड़ा, इसलिए मूसा की व्यवस्था दिए जाने से भी पहले ''पाप जगत में था।''

आयत 13 आगे कहती है, ''परन्तु जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप गिना नहीं जाता।'' ''गिना जाता'' उसी मूल शब्द से लिया गया है जिसका अनुवाद अध्याय 4 में ''गिना गया'' हुआ है। इस कारण HCSB में ''व्यवस्था न होने पर पाप किसी के लेखे में नहीं डाला जाता'' है। ऊपरी तौर पर यह आयत यह कहती प्रतीत होती है कि लोगों ने लिखित व्यवस्था से पहले पाप किया था, परन्तु वे मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पहले पापी नहीं *गिने गए* थे। परन्तु पौलुस ने बड़ी सावधानी से इस बात को साबित किया कि लोग तब भी पाप करते थे, जब उनके पास कोई

लिखित व्यवस्था नहीं थी और वे तब भी अपने पापों के लिए *ज़िम्मेदार ठहराए जाते* थे (देखें 3:9ख)। एक बार फिर यह स्पष्ट लगता है कि पौलुस के विचार को विस्तार दिया जाना आवश्यक है। ऐसा करने का एक ढंग यह है: ''जहां व्यवस्था नहीं वहां पाप गिना नहीं जाता [परन्तु सबके पास व्यवस्था अर्थात एक अलिखित व्यवस्था *थी*]।''[8]

इस तथ्य के बावजूद कि सृष्टि की रचना और व्यवस्था के दिए जाने की बीच की सदियों में मनुष्य जाति के पास कोई व्यवस्था नहीं थी, वे फिर भी मरते थे: ''तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज किया'' (आयत 14क)। मृत्यु को एक नृशंस हाकिम के रूप में दिखाया गया है, जो अपनी प्रजा को मरने की आज्ञा देता है। शारीरिक और आत्मिक मृत्यु दोनों के लिए यह बात सच है। जहां तक हमें मालूम है, आदम और मूसा के बीच में यदि शारीरिक रूप से कोई व्यक्ति नहीं मरा तो वह हनोक था (उत्पत्ति 5:24)। आत्मिक मृत्यु पर कोई अपवाद नहीं था। व्यक्तिगत पाप के कारण सब लोग आत्मिक रूप में मरते थे। मृत्यु का शासन हर जगह था, जो सारी मनुष्यजाति को प्रभावित कर रहा था।

मृत्यु का राज उन पर भी था ''जिन्होंने उस आदम[9] के अपराध की नाईं[10] जो उस आने वाले का चिह्न है, पाप न किया'' (आयत 14ख)। लोगों ने पाप किया था, परन्तु ''उन्होंने आदम की तरह, परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा को नहीं तोड़ा था'' (NLT)। आदम की तरह उन्हें यह नहीं बताया गया था कि ''तू अवश्य मर जाएगा [यदि सही करने में असफल रहे]'' (उत्पत्ति 2:17)।[11] तौभी शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार से वे *मरे*।

''अन्तिम आदम'' का परिचय दिया गया

यहां तक वचन में एक उदास तस्वीर बनाई गई है। पहले आदम के पाप से मनुष्यजाति पर विनाश आया, परन्तु पौलुस आशा की एक बात जोड़ने को तैयार था। आयत 14ग में उसने ''अन्तिम आदम'' का परिचय देते हुए कहा कि पहला आदम ''उस आने वाले का चिह्न'' था। ''आने वाला'' बेशक मसीह को ही कहा गया है। आदम केवल पुराने नियम का पात्र है जिसे मसीह के ''चिह्न'' के रूप में दिखाया गया है।[12]

''चिह्न'' शब्द यूनानी शब्द *tupos* का लिप्यंतरण है। *Tupos* जो ''प्रहार'' या ''चोट'' का संकेत देता है चोट मारकर या प्रहार करके प्रभाव देने का संकेत है।[13] आपने किसी सरकारी अधिकारी को किसी दस्तावेज़ पर मोहर लगाते हुए देखा होगा।[14] मुहर को ''चिह्न'' और कागज़ पर लगे प्रभाव को ''प्रतिचिह्न'' के रूप में विचार करें। पौलुस की तुलना/अन्तर में आदम ''चिह्न'' है और मसीह उसका ''प्रतिचिह्न'' है।

सरकारी अधिकारी की रबर स्टैंप और उससे लगी मुहर पर विचार करें। कई प्रकार चिह्न और प्रतिचिह्न *एक समान* हैं। उदाहरण के लिए कल्पना करें कि अधिकारी स्टैंप का इस्तेमाल यह

कहने के लिए करता है:

अस्वीकृत!

मोहर यह निशान नहीं छोड़ेगी जो इस प्रकार पढ़ा जाए:

स्वीकृत!

जैसे स्टैंप और उसका निशान समान हैं, कई प्रकार से आदम और मसीह भी उसी प्रकार समान हैं। दोनों को ''मुखिया'' के रूप में माना जा सकता है, जिसमें आदम मानवीय परिवार का सांसारिक मुखिया था, और मसीह परमेश्वर के परिवार (''कलीसिया''; 1 तीमुथियुस 3:15) का आत्मिक मुखिया है। दोनों ने एक काम किया जिससे सारी मनुष्य जाति प्रभावित हुई: अदन में आदम का पाप और क्रूस पर मसीह की मृत्यु।

परन्तु अन्य प्रकार से चिह्न और प्रतिचिह्न एक जैसे *नहीं* हैं; प्रतिचिह्न चिह्न का *उलट* हो सकता है। सरकारी अधिकारी की स्टैंप में वापस आते हुए, फिर से कल्पना करें कि कागज़ पर लगा निशान इस प्रकार है:

अस्वीकृत!

यदि यह निशान लगा, तो रबर स्टैंप पर यह इस प्रकार होगा:

!तकृीवस्अ

वचन पाठ में आगे बढ़ते हुए इस उदाहरण को ध्यान में रखें। पौलुस ने न केवल यह ध्यान दिलाया कि आदम और मसीह *समान* कैसे हैं, बल्कि यह भी कि वह *भिन्न* कैसे हैं।

Tupos के विचार को बताने के लिए कई शब्दों का इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे ''pattern'' (NIV), ''example,'' ''figure'' (KJV) और ''foreshadowing'' (देखें NEB) यूजीन पीटरसन ने आयत 14 के अन्त को इस प्रकार लिखा: ''आदम, जिसने हमें इसमें डाला, ... उस की ओर आगे को संकेत करता है, जो हमें इसमें से निकालेगा'' (MSG)।

दो ''आदमों'' में अन्तर (5:15-17)

हमें पौलुस से पहले यह बताने की उम्मीद हो सकती है कि आदम और मसीह समान कैसे हैं, परन्तु उसने पहले यह समझाया कि वे *अलग* कैसे हैं। अगली तीन आयतों पर नज़र डालें और देखें कि पौलुस ने अन्तर के शब्दों का इस्तेमाल कितनी बार किया है, ''वैसा नहीं,'' ''अधिकाई से'' और ''क्योंकि जब'' जैसे शब्द। यह तो ऐसा है, जैसे पौलुस को यह कहते ही कि आदम ''उसका चिह्न है, जो आने वाला था'' यह भय था कि कहीं उसके पाठक यह न सोच लें कि दोनों हर बात में समान हैं, इसलिए उसने जल्दी से ध्यान दिलाया कि ऐसा नहीं है।

दोनों के काम भिन्न थे

अन्तर में आदम और मसीह के कामों की व्याख्या करते हुए ध्यान आदम के पाप और मसीह के बलिदान की ओर दिलाया गया है। पहला कार्य आत्म आनन्द का था जबकि दूसरा आत्म उपेक्षा का कार्य था।

पौलुस ने आरम्भ किया, ''पर जैसा अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के वरदान की नहीं,[15]'' (आयत 15क)। ''वरदान'' का अनुवाद *charisma* से किया गया है, यह ''अनुग्रह'' *charis* के लिए शब्द से सम्बन्धित ''दान'' के लिए शब्द है। ''वरदान'' थोड़ा अनावश्यक है क्योंकि परिभाषा से ''दान'' ऐसी वस्तु होती है जिसे प्राप्तकर्त्ता ने कमाया नहीं है। पौलुस का ज़ोर इस तथ्य पर था कि परमेश्वर का दान ''क्रूस में केन्द्रित'' आदम के अपराध *जैसा नहीं* था। NEB में ''परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य आदम की गलती के किसी भी अनुपात से बाहर है।''

फिर पौलुस ने एक उदाहरण दिया जो उसके मन में था। एक ओर तो ''एक मनुष्य [आदम] के अपराध से बहुत लोग मरे'' (आयत 15ख)। ''बहुत'' के लिए यूनानी शब्द (*polus*) का अर्थ है ''बड़ी संख्या'' संख्या कितनी बड़ी है यह संदर्भ पर निर्भर करता है। इस वचन में, ''बहुत'' का इस्तेमाल ''सब'' के साथ अदल-बदल कर किया गया है (देखें आयत 18)। आदम के पाप का एक परिणाम यह है कि शारीरिक रूप में *सब* मरते हैं। ''प्राकृतिक परिणाम से मृत्यु मनुष्यों का भाग्य बन गई'' (फिलिप्स)। एक और परिणाम यह था कि अपने सब दुखद परिणामों के साथ, पाप संसार में आ गया।

दूसरी ओर, ''परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ, बहुतेरे लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ'' (आयत 15ग)। परमेश्वर द्वारा यीशु के ''दान'' ने आदम के पाप के प्रभाव को बेअसर कर दिया। सब लोग ''बहुतेरे'' मुर्दों में से जिलाए जाएंगे (यूहन्ना 5:28, 29)। परन्तु परमेश्वर का ''दान'' उससे ''अधिकाई से'' होता है। लोग न केवल मुर्दों में से जिलाए जाएंगे, बल्कि उन्हें आत्मिक शरीर भी दिए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:44)। इसके अलावा धर्मी लोग ''अनन्त जीवन के अधिकारी'' होंगे (मत्ती 19:29)। इतना ही नहीं उद्धार पाए हुए लोग आदम द्वारा खोए स्वर्गलोक से भी कहीं बेहतर स्वर्गलोक में वास करेंगे (देखें प्रकाशितवाक्य 21; 22)। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है, ''संसार की आशा ... 'बहुतायत ...' में पाई जाती है।''[16]

यह सब अनुग्रहकारी दान था; प्रभु को उसे उलटने की कोई आवश्यकता नहीं थी जिसे आदम ने बिगाड़ा था। इसी कारण पौलुस ने ''परमेश्वर के *अनुग्रह* और यीशु मसीह के *अनुग्रह* से दिए गए *दान* की बात की।'' ''अनुग्रह'' (दो बार इस्तेमाल किया गया) के लिए शब्द *charis* से लिया गया है। ''दान'' आयत में पहले आए शब्द की तरह *charisma* से नहीं, बल्कि *dorea* से लिया गया है, जिसका अर्थ भी ''मुफ्त दान'' है।[17] पौलुस ने अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल किया ताकि हम बात को समझ लें कि जो कुछ परमेश्वर हमारे लिए करता है वह उसके *अनुग्रह* की एक अभिव्यक्ति है यानी *दान* है।

कार्यों का उद्देश्य भिन्न

आयत 16 में पौलुस ने आदम के एक काम और मसीह के एक काम के अन्तर को और

बढ़ाया, ''जैसा एक मनुष्य [आदम] के पाप करने का फल हुआ, वैसा ही [परिणाम] दान [*dorea*] [यीशु का] की दशा नहीं'' (आयत 16क)। प्रेरित ने फिर ध्यान दिलाया कि परमेश्वर का दान आदम के पाप के बदले से ''बहुतायत से'' होता है।

पौलुस ने कहा, ''क्योंकि एक ही [आदम के पाप] के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ'' (आयत 16ख)। पौलुस ने यहां कानूनी भाषा का इस्तेमाल किया, जैसा उसने आम तौर पर रोमियों की पुस्तक में किया। ''फैसला'' *krima* से लिया गया है और इसका अर्थ ''निर्णय'' है (मेकोर्ड)। ''फल'' का अनुवाद *katakrima* से किया गया है। (*krima* के एक मज़बूत रूप) और इसका अर्थ निर्णय के कारण घोषित की गई ''सज़ा''[18] के लिए है। *Katakrima* उस सब बुराई का संकेत है जो मनुष्यजाति पर आई, जिसमें शारीरिक मृत्यु पर विशेष ज़ोर दिया गया।[19] इस पर विचार करें: *एक* पाप के कारण *सब* पर जो जीवित रहे हों, वे पुरुष हों, स्त्रियां या बच्चे, शारीरिक मृत्यु आई![20]

''दूसरी ओर,'' पौलुस ने आगे कहा, '' *बहुतेरे* अपराधों से एक वरदान *[charisma]* उत्पन्न हुआ, कि लोग धर्मी ठहरें'' (आयत 16ग)। एक पल के लिए ''बहुतेरे अपराधों'' वाक्यांश के प्रभावों पर विचार करें। यदि एक अपराध इतना भयंकर था जिसने सारी मनुष्य जाति को प्रभावित किया, तो ''बहुतेरे अपराधों'' की अत्यधिक विकरालता का हिसाब लगाने की कोशिश करें: पहले पाप के बाद से अरबों-खरबों किए गए पाप। मोसेस ई. लार्ड ने लिखा है:

> ... *एक पाप* के पर्याप्त दण्ड के लिए मृत्यु को न मानें तो ... पाप का स्वभाव ... समझने से बाहर हो जाता है। कोई मनुष्य इसकी घोरता को समझ नहीं सकता। पचास वर्ष के काल तक रहने वाले एक जीवन के पापों के लिए, इसी दर पर, दण्ड क्या होगा?[21]

उस ''एक जीवन'' को कालांतर में रहने वाले लोगों के अलावा आज के छह ख़रब लोगों से गुणा करें तो इसका उत्तर मानवीय समझ से कहीं बाहर होगा। इस कारण यह प्रश्न पूछा जाना आवश्यक है कि क्या केवल आदम के पाप के प्रभाव को निरस्त करने के लिए ही परमेश्वर का दान पर्याप्त था?

पौलुस का उत्तर फिर से मज़बूती से था। उसने कहा कि मुफ्त दान से ''लोगों को धर्मी'' ठहराया गया (आयत 16घ)। उसने फिर से कानूनी भाषा का इस्तेमाल किया। NEB में ''अनुग्रह का कार्य ... छुटकारे के निर्णय में दिया गया'' है। अन्य शब्दों में, यीशु के द्वारा, आदम और उसके सब वंशजों पर फैसला बदल दिया गया था। यह बात शारीरिक मृत्यु के लिए सच है। हम आज भी मरते हैं (इब्रानियों 9:27); परन्तु यीशु के कारण, मृत्यु अब सदा तक रहने वाली नहीं है (यूहन्ना 5:28, 29)।

आत्मिक मृत्यु के लिए भी यही बात सच है। वचन में परमेश्वर के दान के ''अधिकाई से'' होने पर पौलुस के ज़ोर को ध्यान में रखें। रोमियों में ''धर्मी ठहराया जाना'' (*dikaioma*) का अर्थ आम तौर पर परमेश्वर की नज़र में सही ठहराया जाना है। इस वचन में, निश्चय ही *dikaioma* में दान के आत्मिक लाभ भी शामिल हैं।[22] मैक्गर्वे ने लिखा है:

> मसीह के बलिदान के धर्मी ठहराने की सामर्थ का अनुमान कौन लगा सकता है, क्योंकि

यह विश्वासियों के लिए अंसख्य पापियों द्वारा किए गए बेशुमार पापों की ज़बर्दस्त शक्ति को, मानवीय जीवनों के अनकहे पलों के हर पाप को जो विनाशकारी शक्ति लेकर चलता है, जिसे युगों का बीतना खत्म नहीं कर सकता, निरस्त करती है ?[23]

कार्यों के प्रभाव अलग

आयत 17 में पौलुस ने फिर से परमेश्वर के दान के आत्मिक प्रभाव पर ज़ोर दिया। उसने कहा कि ''जब एक मनुष्य के अपराध के कारण[24] मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा [देखें आयत 14] राज्य किया'' (आयत 17क)। NEB में एक पापी के द्वारा मृत्यु ने अपना शासन स्थापित किया। फिर पौलुस ने यह अन्तर किया: ''जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे'' (आयत 17ख)।

आयत 17 में अन्तर की कम से कम तीन बातों का या तो संकेत है या अभिव्यक्ति। पहला यह है कि दान का परिणाम अपराध के परिणाम से ''बहुतायत'' से है। ''बहुतायत'' शब्द के द्वारा इस पर फिर से ज़ोर दिया गया है (''भरपूर आपूर्ति''; NIrV)। यह ''बहुतायत'' का परिणाम ''धर्मरूपी [*dikaiosune*] वरदान [dorea] से दर्शाया गया है।'' ''धर्म रूपी'' शब्द ''धर्मी ठहराए जाने'' के एक ही परिवार के शब्दों से है। इसका अर्थ परमेश्वर की नज़र में सही गिना जाना है।

दूसरे अन्तर का संकेत दिया गया है। आदम के अपराध के एक परिणाम की हमारे पास कोई पसन्द नहीं है: यदि हम पैदा होते हैं तो शारीरिक रूप से मरेंगे। (मृत्यु से केवल वही लोग बच सकते हैं जो मसीह के वापस आने पर जीवित होंगे [देखें 1 थिस्सलुनीकियों 4:15-17]।) परन्तु परमेश्वर के दान के सबसे महत्वपूर्ण परिणाम की हमारे पास पसन्द है कि हम धर्मी गिने जाएं। इस कारण पौलुस ने ''जो लोग अनुग्रह और धर्म रूपी वरदान बहुतायत से *पाते हैं*'' की बात की। कोई भी दान स्वीकारा जा सकता है या उसे ठुकराया जा सकता है। केवल वही लोग जो परमेश्वर के दान (''विश्वास के आज्ञापालन'' के द्वारा [रोमियों 1:5; 16:26]) को स्वीकार करते (''ग्रहण करते'') उस दान के पूर्ण लाभ पाते हैं।

अन्तर की तीसरी बात अनाउपेक्षित है। आयत 17 के पहले भाग में पौलुस ने *मृत्यु* के शासन करने की बात की। आगे बढ़ते हुए हमें यह पढ़ने की उम्मीद हो सकती है कि मसीह के द्वारा अब *जीवन* राज करता है। इसके विपरीत पौलुस ने कहा कि दान पाने वाले ही ''जीवन में राज करेंगे।'' दास (पापी) हाकिम (मृत्यु) के साथ स्थान बदलते हैं!

मसीही लोग अब मसीह के राज्य (कलीसिया) के लोग होने के कारण ''राज'' करते हैं (देखें प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:10)

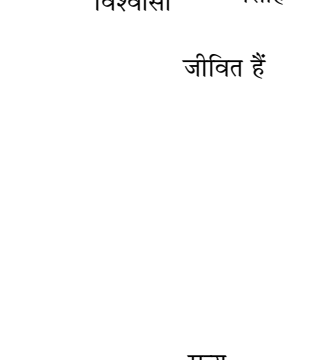

और अनन्त काल तक मसीह के साथ राज करेंगे (देखें 2 तीमुथियुस 2:12)। ''जीवन में'' राज करने के सम्बन्ध में हमें यीशु की बात याद दिलाई जाती है: ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10)। हमें मसीह में अब ''नया जीवन'' मिला है (रोमियों 6:4) और एक दिन हम स्वर्ग में ''अनन्त जीवन'' का आनन्द लेंगे (रोमियों 6:23; देखें तीतुस 1:2)।

फिर से यह ज़ोर दिया गया है कि *एक* मनुष्य (आदम) के द्वारा शोक आया, जबकि *एक* मनुष्य (मसीह) प्रसन्नता लाया: ''क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के अर्थात यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज करेंगे'' (रोमियों 5:17)।

सारांश

अगले पाठ में हम दो ''आदमों'' की *तुलना* देखते हुए (आयतें 18-21) को रोमियों 5:12-21 का अध्ययन समाप्त करेंगे। फिर हम इस कठिन वचन में से व्यावहारिक प्रासंगिकता बनाते हुए अपने अध्ययन का निष्कर्ष निकालेंगे।

अन्त में हम दो ''आदमों'' को फिर से देखते हैं। पहले आदम ने (उत्पत्ति 5:1-5) श्राप लाया (उत्पत्ति 3:17; मलाकी 4:6) जबकि ''अन्तिम आदम'' की कहानी (मत्ती 1:1; देखें 1 कुरिन्थियों 15:45) ''अब कोई श्राप नहीं'' के साथ समाप्त होती है (प्रकाशितवाक्य 22:3; KJV)। पहला आदम संसार में मृत्यु लाया, जबकि ''अन्तिम आदम'' जीवन लाया। आप चाहें पहले आदम के पीछे चलकर मर सकते हैं या चाहें तो ''अन्तिम आदम'' के पीछे चलें और जीएं।

इस वचन का विषय ''मृत्यु या जीवन? पसन्द आपकी है'' हो सकता है। शारीरिक मृत्यु में आपकी कोई पसन्द नहीं है क्योंकि ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना ठहराया हुआ है'' (इब्रानियों 9:27); परन्तु आत्मिक मृत्यु में आप अपनी पसन्द चुन सकते हैं। आप ''अपने अपराधों और पापों में मरे'' रहना चाहें तो रह सकते हैं (इफिसियों 2:1), या फिर ''मसीह के साथ जीवित'' हो सकते हैं (आयत 5)। इसी प्रकार शारीरिक जीवन लेने में आपके पास कोई पसन्द नहीं थी, क्योंकि आप अपनी मर्जी से पैदा नहीं हुए। परन्तु आत्मिक जीवन में आपको पसन्द दी गई है। यीशु इसलिए आया ताकि ''आप जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10), परन्तु आप चाहें तो उसके अनुग्रहकारी उपाय को स्वीकार करें या उसे ठुकरा दें। मृत्यु या जीवन? पसन्द आपकी है।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन का इस्तेमाल करते हुए आप अपने सुनने वालों को बताएं कि ''विश्वास के आज्ञापालन'' के द्वारा वे जीवन को कैसे ''चुन'' सकते हैं (देखें 1:5; 16:26; 1:16; 10:9, 10; 6:3-6; 12:1)। इस पाठ के लिए एक वैकल्पिक शीर्षक है ''मृत्यु या जीवन? पसन्द आपकी है।''

टिप्पणियां

[1]इस पाठ के मुख्य शीर्षक जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 149, 154, 156. [2]क्रिसोस्टोम *होमिलीज़ ऑन द एपिस्टल टू द रोमन्स* होमिली 10. [3]आज के कुछ संदेहवादी ''विद्वानों'' के विपरीत पौलुस उत्पत्ति की पुस्तक में आदम और पाप में उसके गिरने की कहानी को ऐतिहासिक रूप से सही मानता था। [4]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 149. [5]डेविड एफ. बर्गेस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशंस* (सेंट लुईस: कन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 57-58. [6]जो लोग यह मानते हैं कि हमारे वचन पाठ में ''मृत्यु'' *केवल* शारीरिक मृत्यु है वे यह ध्यान दिलाते हैं कि पौलुस का ज़ोर उस प्रभाव पर था कि *एक* पाप (आदम का पाप) संसार पर था। वे सुझाव देते हैं कि शब्दों को संदर्भ से मेल खाने के लिए, ''सबने पाप किया'' का अर्थ यह होना चाहिए कि जब आदम ने पाप किया, तो यह *ऐसा* था जैसे उसके सब वंशजों ने पाप किया। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने कई बार ऐसे तर्क का इस्तेमाल किया। देखें इब्रानियों 7:9, 10, जहां लेखक ने कहा कि लेवी ने अपने जन्म से बहुत पहले मलिकिसिदेक को दशमांश दिया था-क्योंकि लेवी के दादा के पड़दादा अब्राहम ने मलिकिसिदेक को दशमांश दिया था। [7]रोमियों 3:23 की तरह यह समझ आता है कि पौलुस के ध्यान में *जिम्मेदार* लोग थे। [8]यदि ''मृत्यु'' का अर्थ हमारे पूरे वचनपाठ में शारीरिक मृत्यु लिया जाए, तो आयत 13 में पौलुस की बात का अर्थ इस प्रकार होगा: यदि शारीरिक मृत्यु *व्यक्तिगत* पाप का दण्ड थी, तो मूसा की व्यवस्था दिए जाने से पूर्व कोई मरा नहीं होगा। [9]''जिन्होंने आदम के अपराध जैसा पाप नहीं किया था'' वे बच्चे हो सकते हैं। [10]यूनानी शब्द (*parabasis*) का अनुवाद ''अपराध'' किया जाता है। इस पुस्तक में पहले ''त्रासदी से विजय'' पर चर्चा की गई थी।

[11]परमेश्वर ने आदेश दिया था कि हत्यारों को मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए (उत्पत्ति 9:6), ''परन्तु कोई ऐसा नियम नहीं था जिसमें मृत्युदण्ड सब के लिए हो'' (जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप्प वाई पैंडल्टन, *थिस्सलोनियंस, कोरिन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* [सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तिथि नहीं], 335)। [12]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स: मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 124. [13]वाइन, 202; *दि एनालिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 411. [14]ऐसा उदाहरण इस्तेमाल करें जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [15]एक शब्द जिसका अनुवाद कई बार ''अपराध'' किया जाता है पर चर्चा इस पुस्तक में पहले आए ''त्रासदी से विजय'' में की गई थी। यह उसी मूल अर्थ के साथ एक अलग शब्द (*paraptoma*) है। यूनानी रूप (*parapipto*) का अर्थ ''गिर [*pipto*] जाना [*para*]।'' [16]मैक्गर्वे एण्ड पैंडल्टन, 336. [17]वाइन, 264. [18]वही, 119. [19]''केवल शारीरिक मृत्यु'' के विचार में, ''दण्ड केवल शारीरिक मृत्यु के लिए दोषी ठहराने के लिए लगता है।'' [20]जैसा पहले कहा गया था, एक अपवाद हनोक था। दूसरा अपवाद एलिय्याह था। वे भी जो मसीह के वापस आने पर जीवित होंगे शारीरिक रूप से मरेंगे नहीं।

[21]मोसेस ई. लॉर्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लैक्सिंगटन, कैंटकी.: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 167. [22]''केवल शारीरिक मृत्यु'' की वकालत करने वाले कुछ लोग ज़ोर देते हैं कि यहां ''धर्मी ठहराया जाना'' केवल शारीरिक मृत्यु के दण्ड का विपरीत है। [23]मैक्गर्वे एण्ड पैंडल्टन, 338. [24]यूनानी शब्द का अनुवाद ''एक अपराध से'' हो सकता है।